

“यह बेहद का परिवार कितना अच्छा वन्दरफुल परिवार है, यह मिलन साधारण मिलन नहीं है, जैसे अभी सब मिल रहे हैं, ऐसे मिलते मिलते मिल जायेंगे,  
सदा खुश रहना और खुशी बांटना”

ओम् शान्ति। सभी भाई और बहिनें आज देखो बेहद के हॉल में कितने आनंद से बैठे हैं, सुन रहे हैं। सभी के मन में यही है हम बेहद के हाल में बेहद स्थिति में स्थित हैं। चाहे हॉल है, हर एक हॉल में भले बैठे हैं लेकिन हॉल में बैठे, बेहद के हॉल में बेहद की सभा में, हद में बैठे भी बेहद के अनुभव में कितने मुस्करा रहे हैं। सभी के मस्तक में बाप है, बाप के मस्तक में सभी बच्चे हैं। हर एक कितना मीठा मुस्करा रहे हैं। बाप के मन में मेरे मीठे बच्चे, बच्चों के मन में मेरे मीठे बाबा। बाप और बच्चों का मिलन कितना मधुर मीठा है। हरेक एक दो को देख वाह मेरा बेहद का परिवार, सब हद से निकल बेहद में आ गये हैं। जहाँ देखो अपना ही परिवार बेहद का कितना मीठा लग रहा है। बेहद का परिवार, बेहद के परिवार के बीच में एक दो को देख हर्षित हो रहे हैं। यह बेहद में ऐसे बैठना यह भी ड्रामा में था। बेहद के हाल में कैसे एक दो को देखके हर्षित हो रहे हैं। बाप कह रहे हैं वाह बच्चे वाह! और बच्चे कह रहे हैं वाह बाबा वाह! यह दृश्य भी नून्धा हुआ था। हर एक परिवार को देख हर्षित हो रहे हैं। वाह बेहद का परिवार वाह! बेहद का परिवार है ना। हाँ ऐसे हाथ उठाओ। बेहद का परिवार, बेहद के मैदान में इकट्ठे हुए हैं। कितना मजा आ रहा है बेहद में। बेहद का परिवार देख सभी बेहद में आ गये हैं। सभी बेहद परिवार में देखो कैसे बैठे हैं, जैसे एक छोटा सा परिवार इकट्ठा हुआ है। जहाँ देखो वहाँ ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी हैं। इतना बड़ा परिवार देख-देख कर कितनी खुशी हो रही है, वाह! कितना अच्छा परिवार है। थोड़े समय में यह परिवार, प्यारा परिवार कैसे इकट्ठे हुए हैं। ऐसा लगता है जैसे हम मिले हुए ही हैं। ऐसे ही मिलते रहेंगे। यह मिलन भी एक वन्दरफुल है। एक दो को देख करके खुशी कितनी होती है। यह फलाना भी है, फलानी भी है वाह। जहाँ देखो वहाँ कितना मधुरता है। सबके चेहरों पर कौन है? मेरा बाबा, मेरा बाबा देख करके सब कितने मुस्करा रहे हैं। जैसे बहुत दिनों के बाद देखा है, भूल गये हैं। अभी तो इकट्ठे होकर बैठे हैं, कितना मीठा लग रहा है। सब आपस में कितने समय के बाद मिले हैं, इतना परिवार मिला है, यही खुशी है। परिवार को देख करके खुशी होती है ना। इतना बड़ा परिवार है। अभी तो बाबा आपने यह हॉल दिखा दिया, अभी तो कुछ भी हो जायेगा तो हम इस हॉल में आ जायेंगे। मजा है। यह मिलन साधारण मिलन नहीं है। कितने वर्षों के बाद हम और आप आपस में साकार रूप में एक दो को देख रहे हैं और देख देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक के दिल से वाह वाह! का गीत बज रहा है। भले आप और हम अभी अलग-अलग रहते हैं लेकिन अलग रहते हुए भी ऐसे लगता है कि कहाँ से कहाँ आके हमारा मिलन हुआ है। यह भी छोटा सा मिलन है लेकिन अब उम्मीद है कि ऐसे मिलते रहेंगे। नहीं तो कितना दूर लगता है और देखा है ना मिलना क्या होता है। मिल के देख लिया ना तो अभी बिछुड़ना बहुत थोड़ा याद पड़ेगा। सभी को यह मिलन अति प्यारा लगता है ना। प्यारा लगता है? ऐसे ही बैठे रहें, ऐसे ही खाते रहे लेकिन शरीर है ना। सूक्ष्म शरीर तो नहीं है, स्थूल है।

बापदादा को भी बच्चों को देख बहुत खुशी होती है। हर एक के दिल में क्या-क्या आ रहा है, हमको

तो यही आता मेरा बाबा हमको मिल गया बस। अभी बाबा को देख करके लगता कितना प्यारा है। प्यार की झोलियां भर गई। तो अभी सभी क्या करेंगे? सभी एक दो में मिले, मिलन मना करके फिर भी बिछुड़ना पड़ेगा। हर एक के दिल में इतने दिनों का बिछुड़ना अभी क्या लग रहा है, कहाँ थे क्या था लेकिन यह मिलना और बिछुड़ना यह भी एक वन्दरफुल पार्ट है। अभी मिल रहे हैं तो देखो कितना प्यारा लगता है, थोड़े टाइम के बाद फिर बिछुड़ जायेंगे। यह बिछुड़ना अच्छा नहीं लगता। यह फिर कब ऐसे इकट्ठे रहेंगे। अभी तो यही याद आता है, कैसे इकट्ठे मिलन था, कैसे बिछुड़ गये और अभी फिर मिलन का दिन आ गया है। मिलन के दिन की खुशी है? खुशी है?

यह मिलना तो कभी-कभी हो गया है। अभी सदा मिलन को याद करते-करते मिलन ही मिलन होगा। यह मिलन प्यारा लगता है? हाथ उठाओ, देखो कितना अच्छा लगता है देखो, जो फोटो वाले हैं वह तो अपने कैमरे के अन्दर रख देंगे। आपस में यह मिलन याद करते थे और आज मिल रहे हैं वह दिन भी आ गया। (बाबा 25 हजार आये हैं) सबको कितनी खुशी है। इतने सारे मिलेंगे यह ख्याल में भी नहीं था लेकिन आज मिल रहे हैं। आज मिलन का दिन है।

**सेवा का टर्न इन्दौर का है:-** इन्दौर की ड्युटी है। अच्छा है, इन्दौर वाले देखो खुश हो रहे हैं ड्युटी सम्भाल रहे हैं। कितना वन्दरफुल ड्रामा में यह भी नूंध थी। यह मिलन का भी दिन था। अभी तो फिर भी मिलना चाहें तो मिल सकते हैं। तो अभी दिल में क्या है? खुशी का खजाना।

**डबल विदेशी भाई बहिनें 50 देशों से 500 आये हैं:-** हाथ हिलाओ। अच्छा है। फिर भी इतने मिले तो सही। कितने समय के बाद मिले हैं। मिलते-मिलते अभी मिल जायेंगे। खुशी है ना मिलने की। कितनी खुशी है। हाथ उठाओ। कितनी खुशी है, कितनी खुशी है। देखो, तो इसमें (टी.वी. में) कितना अच्छा लगता है।

**कलकत्ता से 600 भाई बहिनें स्मृति दिवस पर फूलों से श्रंगार करने आये हैं:-** 600 आये हैं। यहाँ तो सहज है, आ गये, बैठने की जगह भी अच्छी मिली है। सब खुश हुए मिल कर एक दो से, कितनी खुशी हुई। फिर भी मिलना तो हुआ। सब दिल में एक दो से मिलके खुश हो गये। ऐसे मिलते रहेंगे अभी। इनसे भी ज्यादा हो सकता है।

सभी बच्चे इकट्ठे हुए हैं तो बाप को भी खुशी है। बाप को कितनी खुशी है।

**दादी जानकी जी मिल रही हैं:-** (दादी जी ने बापदादा को गोल्डन फूल दिया) अरे, यह देखो आपके लिए यह गोल्डन फूल है। (बाबा आपके लिए है) हमारे लिए माना सबके लिए। आपके लिए भी भेजा ना। बच्चों को देख खुशी कितनी होती। बहुत अच्छा। सभी को देख रहे हैं, (दादी ने बाबा से हाथ मिलाया) एक हाथ नहीं है, सभी के हाथ बाबा के हाथ में हैं। देखो, थोड़ा टाइम तो मिले, मिले तो सही। देखा तो सही। लेकिन अभी तो मिलते रहेंगे। कहो मेरा बाबा आ गया। अब मिलने के बिना रह सकेंगे। मिलते-मिलते मिल जायेंगे। सभी खुश। सभी खुश रहें, बस यही बाप चाहते हैं। कोई तकलीफ नहीं। ठीक है।

**नारायण दादा, मनोज से (बाबा का लौकिक परिवार):-** बहुत अच्छा। ऐसे लगता है जैसे थे ही इकट्ठे। अभी मिलते ही रहेंगे। समय प्रति समय आओ, आते रहो बस। अभी इतना तो है। अभी कोई न कोई तरीके से ऐसा स्थान मिल जायेगा जो हम इकट्ठे रहेंगे। अभी वह टूटना है। ठीक है। इतने पाण्डव

इतनी शक्तियां कुमारियां क्या नहीं कर सकती हैं। अभी सब हुआ पड़ा है सिर्फ थोड़ा हाथ लगाना पड़ेगा बस।

सदा खुश रहना और आपस में खुशी बांटना। और कुछ नहीं है आपके पास तो खुशी तो है ना। खुशी आपस में बांटेंगे तो वायुमण्डल ही बदल जायेगा। जो कोई भी आवे वह देखे कि यह खुशी का महल है। सब खुश हैं। किसी से भी जाकर पूछो खुशी है या नहीं है? खुशी है तो हाथ उठाओ। हाँ देखो सब खुश हैं। खुश रहो बस। ठीक है ना।

बाबा मिल गया, इसीलिए खुश रहो। अभी रोना धोना यह सब खत्म, अभी मुस्कराते रहो। जो भी जिससे मिले मुस्कराते रहो। अभी सब मुस्करा रहे हैं। अभी सभी काम पर जाओ, और रिपोर्ट लाओ हमने बहुत काम किया। मुस्कराते रहो, हंसते रहो, काम करते रहो लेकिन बाबा को नहीं भूलो। बाबा को भूला तो दुःख पाया, इसलिए बस मेरा बाबा, मेरा बाबा, मेरा बाबा... बस बाबा और मैं। अभी क्या करेंगे? काम करना है, काम करो लेकिन खुशी-खुशी से करो। समझा क्या करना है? खुशी नहीं छोड़नी है। खुशी साथ में रखनी है।

**रमेश भाई ने शान्तिवन ट्रामा हॉस्पिटल से याद भेजी है:-** रमेश भाई शुरू से अच्छे सेवाधारी रहे हैं, अभी भी याद भेजी है, आप सबको उसकी याद मिली होगी। और वह यही चाहता है कि बाबा का कोई भी बच्चा तंग नहीं होवे। क्या करें, कैसे करें, ऐसे नहीं। जो भी दिन है वह खुशी से निभाओ। खुशी से निभायेंगे तो और खुशी आयेगी और खुशी बढ़ते-बढ़ते सदा खुशी का वायुमण्डल हो जायेगा।

### ओम् शान्ति ‘दिनचर्या’ 18-1-17 मधुबन

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन के अनुभवी, सर्व तपस्वीमूर्त निमित्त टीचर्स बहिनें तथा ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,  
ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आज हम सबके अति प्रिय पिताश्री ब्रह्मा बाबा का 48 वां स्मृति दिवस है। मधुबन के चारों धामों का श्रृंगार सुन्दर-सुन्दर वैरायटी फूल मालाओं से कलकत्ता के भाई बहिनों ने रात भर जागकर किया है। शान्तिवन में प्यारे बापदादा से सम्मुख अव्यक्त मिलन मनाने के लिए करीब 25 हजार भाई बहिनें पहुंचे हुए हैं। उसमें से काफी संख्या में भाई बहिनें रात को ही पाण्डव भवन में तपस्या के लिए पहुंच गये। अमृतवेले से ही सभी चारों धामों की यात्रा करते बाबा से मीठी-मीठी रूहरिहान करते रहे। फिर साकार और अव्यक्त मुरली सुनने के पश्चात शशी बहन ने बापदादा को भोग लगाया। बाबा ने स्मृति सो समर्थी दिवस पर सभी बच्चों के सफलतामूर्त भव का वरदान दिया और कहा बच्चे सदा बाप के याद की छत्रछाया के नीचे हैं। उसके पश्चात सभी दादियां वरिष्ठ भाई बहिनें, मधुबन निवासी तथा अन्य सभी चारों धामों की परिक्रमा करते रहे। शान्तिवन में भी बाबा के कमरे में, तपस्या धाम और प्रकाश-स्तम्भ पर भी भाई बहिनों की लम्बी कतारें लगी हुई थी। चारों ओर अव्यक्त वातावरण में सफेद पोशधारी फरिश्ते चलते फिरते नज़र आ रहे थे। दोपहर में भोग के पश्चात सभी ने दादियों तथा वरिष्ठ भाई बहिनों के साथ ब्रह्मा भोजन पान किया। शाम के समय सभी बापदादा के आह्वान में डायमण्ड हाल में पहुंच गये। जहाँ

योग तपस्या चलती रही। फिर थोड़े समय के लिए प्यारे अव्यक्त बापदादा अपनी वरदानी दृष्टि से, नज़र से निहाल करने बच्चों की सभा के बीच में पधारे और सबको बहुत प्यार से दृष्टि देते बेहद परिवार को देख हर्षित हो वरदान दिया, सदा खुश रहना और सबको खुशी का दान देना। ऐसे मधुर महावाक्य उच्चारण करते अपने वरदानी हस्तों से सबको स्नेह की छत्रछाया का अनुभव कराते वतन में चले गये।

## स्मृति दिवस प्रति दादी जानकी जी का सन्देश

आज 18 जनवरी मेरे प्यारे बाबा का स्मृति दिवस है। साकार बाबा ने जो हम बच्चों को प्यार, पढ़ाई और पालना दी है, जितना प्यार दिया है, जैसे पालना की है, वैसे पढ़ाई भी सिम्पल तरीके से ऐसी पढ़ाई है जो बाबा का एक-एक महावाक्य दिल से लगा हुआ है। बाबा के वह महावाक्य जीवन में लाने से हम भी बाबा के समान बनकर बाबा के साथ परमधाम, निर्वाणधाम, शान्तिधाम में चलेंगे।

बाबा भले अव्यक्त हुआ, पर अव्यक्त होके भी सूक्ष्मवतन से बहुत अच्छी पालना दे रहा है, सभी को ऐसी पालना मिल रही है जो चारों ओर अनेक बच्चे समर्थ बन मायाजीत, विजयी बन रहे हैं। मैं तो साक्षी होकर देख रही हूँ कैसे इतने सभी बाबा के बच्चे बाबा की यादों में समाये हुए हैं। हरेक के अन्दर है मैं कौन, मेरा कौन! बाबा हरेक बच्चे को ऐसी भासना देता है जो हड्डी-हड्डी रग-रग में बाबा के लिए प्यार समाया हुआ है। वह प्यार की पालना ही हर एक को नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बना रही है। हम देहभान, अटैचमेन्ट से फ्री हो गये हैं।

ऐसे मीठे बाबा की याद में मैं क्या सुनाऊं, दिल कहा है, दिमाग कहा है। हमारे दिमाग में पढ़ाई है और दिल में बाबा है। बाबा ने जो कहा है निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी तो हमें भी ऐसी स्थिति बनानी है। बाबा हमारा माता, पिता, शिक्षक और रक्षक भी है। रक्षा भी करता है, फिर सतगुरु की श्रीमत सिरमाथे पर है बाबा का एक-एक महावाक्य हम बच्चों के लिए श्रीमत है। अव्यक्त रूप में भी हम बाबा की अव्यक्त पालना का बहुत अच्छा अनुभव करते हैं। सारे विश्व में मधुबन से कैसे वायब्रेशन जाते हैं! बाबा के साथ का अनुभव दूर बैठे भी सब करते हैं। भले अभी हम भाग-दौड़ नहीं कर सकती पर वायब्रेशन, वायुमण्डल और जो बाबा के महावाक्य हैं वो चारों ओर सभी को पहुंच रहे हैं।

यह स्मृति दिवस की क्या बातें करूं, बाबा ही नज़रों में है, बाबा ही दिमाग में है। चाहे अष्ट में आये, चाहे 108 में आये या 16 हजार में आये। पर हमको तो आठ में आना है ना! जितनी स्मृति रहेगी उतना पुरुषार्थ में बाबा का बल मिलता है। बाबा यह कहता है तुम एक बाप को याद करो, मधुबन में जो आते हैं उन्हें इतनी अच्छी वृत्ति से स्मृति और स्थिति बनानी चाहिए, जो बाबा हमसे चाहता है उसी अनुसार हम चलें और कुछ नहीं चाहिए। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, हिम्मते बच्चे मददे बाप है। यह सारी लाइफ है, नियत साफ है तो मुराद हांसिल है, जो संकल्प करते हैं, बाबा साकार कर देता है। थैंक्यू, ओम् शान्ति।

**“माला आपका विशेष यादगार है, इस माला को पहनकर सदा मालाधारी होकर रहना, यही चमकती हुई माला आज की विशेष गिफ्ट है”**

(शिवजयन्ती के निमित्त पूरे हाल को बहुत सुन्दर मालाओं से, झण्डियों से सजाया गया है, बापदादा बच्चों की विशाल सभा को देखकरके सभी बच्चों के गले में बांहों की चमकती हुई मालायें पहना रहे हैं)

आज शिव जयन्ती की मुबारक, मुबारक, मुबारक। सभी के दिलों में कितनी खुशी है? सबके दिल में बाबा आ गया है। सभी के दिलों में अभी कौन? बाबा। बाबा ही बाबा देखो। जहाँ देखो बाबा ही बाबा, बाबा ही बाबा, बाबा ही बाबा। तो आज सभी बहुत हर्षित हो रहे हैं। किसलिए? बाबा स्वयं बच्चों को माला पहनाने के लिए आये हैं। बाबा गले में माला पहनायें तो कैसे हो जाते हैं। तो अभी एक-एक के गले में बाबा ने माला पहनाई है। और सभी मालाधारी कितने शोभनिक लग रहे हैं। सब एक-दो की माला को देख करके खुश हो रहे हैं और सदा हर एक को बापदादा की तरफ से माला है ही। माला का श्रंगार हमारा बहुत गाया हुआ है इसलिए आज भी वही यादगार जो है वह याद आया और सब माला के दाने पहने हुए कितने चमक रहे हैं। वाह! कमाल है। जो सभी ने जहाँ तहाँ माला डाल दिया है, सारा हाल मालाओं से सज रहा है। तो मालाओं की यादगार किसकी है? बाप और बच्चों की। कितना भी कोई कहे, बाबा की याद बहुत-बहुत अच्छी है। बाबा की याद तो है ही, बिना बाबा के आप क्या करेंगे? है ही यादगार। तो पहले नम्बर का यादगार तो भाई और बहनों का है, जो सचमुच मेहनत करके अपने को भी सजाया है और इस हाल को भी सजाया है। चारों ओर जैसे खुशी का मेला लग रहा है। तो कितना अच्छा फंक्शन लग रहा है, जैसे अभी-अभी बाबा ने मालाओं से सजाकर आपको तैयार करके बिठाया है क्योंकि बाबा के साथ बच्चे भी हैं। बाबा के साथ सभी भाईयों को, बहनों को थोड़ा बहुत तो सजना पड़ेगा। आपकी मालायें दूर से ही सज रही हैं और बाबा भी देख-देख कर, चारों ओर की मालायें देखकर बहुत खुश है कि वाह! आज बच्चे माला का मणका पहन कर कितने सज गये हैं। तो आज की सभा की सजावट देख करके बाबा खुश हो रहे हैं वाह मेरे बच्चे वाह! एक-दो की सजावट को देख करके ही खुश हो गये हैं। और बाबा को कितनी खुशी हो रही है! एक-एक बच्चे को देख करके बाप भी ऐसे मुस्कराता है जो आप देख रहे हो। यह रीयल फूलों का हार तो है ही लेकिन बाबा ने हर एक के गले में ओरीजनल माला कौन सी पहनाई है? चमकती हुई मालाओं का हार देखो सबके गले में पड़ा है। और फूलों से कितना भी चाहे श्रंगार करे या नहीं करे लेकिन सबके मुख से वाह-वाह तो निकल रहा है ना। वही माला है। यह माला कितनी सज रही है! माला श्रंगार है। तो इस देश में अभी सबसे बड़ा श्रंगार किसका है? बाबा का। सबके गले में देखो हार पड़ा है। तो बाबा ने खुद माला का हार पहनाया है। कॉमन हार तो पहनाते ही हैं, कॉमन बात है लेकिन इस माला का मतलब अच्छा है, बढ़िया है। यह माला यादगार माला है। सभी को देखो सभी का कांध कितना चमक रहा है, एक-दो को देखो और कितने सारे गले सजे हुए हैं। सभी के गले देखकर हर एक कितने खुश हो रहे हैं, वाह! वाह! तो बाबा भी गले में मालायें देख करके खुश हो रहे हैं वाह! सभी मालाधारी, शकल देखो सबकी क्या है? बिल्कुल लाल-लाल। तो ऐसे मालाओं से सजे हुए चमकते हुए मालाधारी बच्चे, यहाँ से आके देखे तो बिल्कुल चमकती हुई माला, सभी की माला बहुत चमक रही है। सबके गले में बाबा की तरफ से मिली हुई मालायें भी पड़ी हुई हैं। सबके गले में हैं और कितना गले में सज रही हैं। हर एक के गले में बाबा चमक रहा है और हर एक गला देखो कितना चमकता है क्योंकि माला आपके यादगार में गाई हुई है। तो आज के दिन डायरेक्ट बाप ने आप सबको माला पहनाई है। देखो यह

माला कितना चमकती है। माला की चमक ही अपनी न्यारी है। एक-दो की माला को देख करके कितने खुश हो रहे हैं। तो आज हाल मालाओं से बहुत सजा हुआ है। सभी अपनी माला देख रहे हैं ना! सारे हाल में मालायें देखो कितनी चमक रही हैं, न्यारे होकरके देखना। अभी सभी उठो तो माला जरूर देखना। ऐसे सजा हुआ, बस। सब माला से सजे हुए कितने सुन्दर लगते हैं। यह हार पड़ा है तो माया भी हार खा लेती है। मालाओं को देख करके ही माया भाग जाती है और आप विजयी बन जाते हैं। तो यह चमकदार माला अपनी देख रहे हो ना! पीछे वाले, राइट वाले, सभी कितने सज गये हैं। चाहे किसको मालायें पड़ी हैं या नहीं! क्योंकि आज बाबा ने सभी को माला का परिचय दे करके बिठाया है। हर एक बच्चा माला से ऐसा सज गया है जैसे सदैव के लिए यह माला इन्हों के गले का मणका है। देख रहे हो अपनी मालायें! हर एक के गले में देखो कितनी माला चमक रही है? जो आप खुद भी देख करके खुश हो रहे हैं। रश तो होता है जहाँ तहाँ।

तो आज मालाओं की चमक बहुत है। हर एक अपनी माला को चमकती हुई देख रहे हैं। हर एक की मालाओं की चमक यहाँ से आकर देखो, एक-एक के माला की महिमा है। इतना सजाने वाला कौन? मेरा बाबा। सब क्या कहेंगे? मेरा बाबा। एक-एक को आगे पीछे यहाँ वहाँ सबको देखो, मालायें कितनी जल्दी से आ गई और सबके गले में पड़ भी गई। सभी के गले में मालायें कितनी सुन्दर लग रही हैं। हरेक एक-एक की माला देख रहा है, सब मालाधारी हैं। बाबा को ऐसे फंक्शन में पतली सी माला भी बहुत अच्छी लगती है। अभी देखो आप लोग आये तो कोई कोई ने माला पहनी हुई थी, जो दिखाई दे रही है। माला को देख करके हर एक के मन में आ रहा है, माला में मेरा नाम तो है ना। है? सभी जो भी बैठे हैं सबका माला में नाम है? हाथ उठाओ। सभी को निश्चय है। अरे, माला हमारे लिए ही बाबा ने बनाई है। तो सभी का चेहरा देखो कितना अच्छा सज रहा है। स्थूल में तो चाहे कितना भी सजाओ, सबकी माला चमक रही है और चमकती हुई माला का चित्र सभी का बहुत अच्छा है। अपने पास रखने लायक है। बाबा से यह गिफ्ट लेकरके जाना। आज की गिफ्ट जो है, वह माला है। हर एक अपने को ऐसा चमकता हुआ माला का मणका समझते हैं? जो समझते हैं मणका तो हमारे गले में पड़ गया है, वह हाथ उठाओ। वाह! वाह! देखो, माला से कितना सजा हुआ देखते हैं? और खास आज के दिन के लिए बाबा माला बनाता है। आपको मिलेगी ना, फिर देखना कितनी चमक है। तो सारा हाल भी देखो मालाओं से कितना अच्छा सुन्दर मालामाल हो गया है। अभी एक-एक बच्चा देख रहा है, मेरे गले में तो है ना। जितना देखता है ना, उतनी मालायें बढ़ती जाती हैं। मालायें पड़ी हुई सभा को देख बापदादा हर्षित हो रहे हैं वाह, वाह मालाधारी! वाह! यह यादगार तो आपका ही है ना, मालायें। चाहे फूलों की पहनाओ, चाहे कोई चीज़ की पहनाओ लेकिन माला यादगार है। और एक-दो को देख करके कितने खुश होते हैं, वाह फलाने ने भी माला पहनी है। तो मालाधारी बच्चों को देख करके सभी मुस्करा रहे हैं। और सेकण्ड में सभी ने पहन लिया, देखो कितना अच्छा लग रहा है। मालाओं को देख करके माला पहनाने वाला याद आता है।

आज खास मालाधारी बच्चे हैं। जैसे माला यादगार में है ना! ऐसे यह माला जो है यादगार है। सभी कितने अच्छे लग रहे हैं। सभी के गले में मालायें चमक रही हैं। सभी का गला देखो कितना अच्छा लग रहा है। बाबा की मूर्ति में भी माला है। माला बहुत अच्छी यादगार है। सभी कहाँ बैठे हो? हाल में। बाबा के गले में सब बैठे हैं। माला देखी है ना! माला चमकती कितना है लेकिन अगर घड़ी घड़ी आप नीचे ऊपर हुए तो फिर माला का शो क्या रहेगा! तो सभी अभी मालाधारी बनके अपने चित्र को देखो। सबका गला कितना सज गया है। यह सब मालायें किसको पढ़ेंगी? बाबा को। बाबा तो संगम पर माला पहनता नहीं।

बाप बच्चों के साथ माला पहनता है, किसको माला नहीं भी हो ना, कोई मणका खो गया हो तो वह अपनी माला का मणका लेके जाना।

तो आज सभी के गले में चमकती हुई मालायें देख कितने खुश हो रहे हैं! वाह एक दो की माला देख रहे हैं ना! तो सबके दिल से वाह वाह निकल रहा है। अच्छा। अभी तो देरी हो जायेगी, इसलिए सभी बच्चों को मालाधारी बनके माला में दिखाया है।

**सेवा का टर्न ईस्टर्न, तामिलनाडु का है। बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम से 15 हजार आये हैं। टोटल 26 हजार आये हैं:-** सभी एक-दो को देख करके सज गये हैं। वाह देख-देख कर बाप भी मुस्करा रहे हैं, वाह बच्चे वाह! अभी भी सभी बैठ करके चित्र निकाल के जाना, भाग नहीं जाना।

**नेपाल:- (2500 आये हैं)** माला पहनने वाले हर एक देख रहे हैं कि मेरी माला कितनी चमक रही है और चमक देखो कितनी है। एक-एक माला के मणके की चमक देखो कितनी है।

**तामिलनाडु:- (3000 आये हैं)** सबकी चमक अच्छी है, बनाई भी अच्छी है। सभी हाथ में देखो, चारों ओर यह चमकती हुई मालायें कैसी अच्छी लग रही हैं। सभी जो भी हैं वह बैठ करके अपनी माला का शो दिखावें। अभी बैठो, ज्यादा श्रंगार नहीं करो, जितना किया है, उतना ही दिखाओ।

**डबल विदेशी 75 देशों से 1000 आये हैं:-** इस ग्रुप में सबसे ज्यादा डबल विदेशी आये हैं। कितनी अच्छी चमक है। चमक देखो सारे हाल की, कमाल है, कितनी सुन्दर हो गई है। सभी हार वाले आप अपनी निशानी अगर अपने पास रखने चाहो तो बापदादा सभी के मालाओं की यादगार, ऐसे करो तो यह जो तिल्ली (हथेली) है, वह कितनी सज रही है। ऐसे चमक रही है, जैसे अभी-अभी स्वर्ग से आई है। आप देखो अभी अपने हार को थोड़ा ऐसे करके देखो, औरों को न देखो, अपने को ही देखो तो कितने चमकते हैं! जो आप बैठे हो, आप ही बदल जाते हो, हार पहनने से। एक आप खुद मालिक हो चमकने वाले और दूसरा हार (फूलों का) भी मिला है, वह भी बहुत चमक रहा है। तीसरा यह हार (बांहों का) भी है, इसकी महिमा तो सबसे ज्यादा है। तो अभी तो सिर्फ देख लो फिर कोई टाइम बाबा उठवाके देखेगा।

अभी जो मालायें हैं, वह चमकती हुई हैं तो और सब कुछ छिपाके सिर्फ मालाओं का हार सजाके आगे करो तो देखो सभा कैसे लगती है!

## **बापदादा ने अपने हस्तों से झण्डा फहराया और 81 वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती की सबको बधाईयां दी**

ओम् शान्ति। अभी आज सभी इकट्ठे हुए हो किसलिए? आपका काम यहाँ मुख्य क्या है? परिवर्तन करने का। तो परिवर्तन किया? अभी सभी एवररेडी रहो। करना है, हो गया। नहीं करना है, तो चक्र लगाके आये। तो सभी देखो, प्यार से देख रहे हैं ना। आराम से देखा ना। सारे साल के लिए शिवजयन्ती की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। आज का दिन विशेष मनाने का दिन है, तो सभी ने अपने अन्दर यह दीपक जलाया, झण्डा भी लहराया, दीपक भी जगाया, सभी के चेहरे में चमक आ गई है। खुशी है ना, सभी की शक्लों में खुशी की झलक आ गई है। पीछे वाले क्या समझते हैं? सभी के दिल में दिलाराम है? बस दिलाराम और दिलवाले। जितनी चीज़ें चाहो उतनी आ सकती हैं लेकिन सिर्फ अभी तक संगम निवासी सीख रहे हैं। जान नहीं गये हैं, सीख रहे हैं लेकिन बाबा चाहता है कि एक बारी बाबा कहे ओम् शान्ति तो ऐसे सभी हर्षित हों जैसे हमारा यह सूर्य और चन्द्रमा कितना सज जाता है, देखा है ना कितना अच्छा सज करके नज़र आता है, तो आज के दिन की सभी को मुबारक हो, मुबारक हो।

“अपने साधारण स्वरूप को बदली कर थोड़ा समय भी संगमयुगी फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करके देखो, यह आपका बहुत अच्छा मुस्कराता हुआ चमकीला रूप है”

ओम शान्ति। आज बापदादा विशेष जो योगयुक्त बच्चे, सबके बीच योगयुक्त बन औरों को भी योगयुक्त बनाने वाले हैं उन्हों को देख हर्षित हो रहे हैं और दिल में ही बहुत-बहुत प्यार भरी दिल के प्यार की यादें बहुत प्यार से दे रहे हैं। बापदादा यही चाहते हैं कि इतने सब बच्चे इकट्ठे योग में बैठें और योग में भी ऐसी योग की स्टेज प्रैक्टिकल में हो, तो यह देख बापदादा बहुत खुश हैं। जैसे बाप देख-देख हर्षित हो रहे हैं ऐसे बच्चे भी बाप को मुस्कराते हुए देख बहुत दिल से खुश होके रेसपाण्ड दे रहे हैं। अभी की सभा की रौनक बहुत अच्छी मुस्कराने वाली देख-देख, बाप भी आज बच्चों की सूरतों में प्यार की झलक देख मुस्करा रहे हैं। तो बच्चे क्या कर रहे हैं? बच्चे भी मुस्करा रहे हैं ना! बाप भी कहते हैं वाह बच्चे वाह! बच्चों की मुस्कराहट और बाप की मुस्कराहट बहुत सुन्दर दिखाई दे रही है। बापदादा जो देखने चाहते थे वह चारों ओर देख बाप भी मुस्करा रहे हैं। सारी सभा में बाप बच्चों को मुस्कराते हुए देख अभी तक दिल में मुस्करा रहे हैं। वाह बच्चे वाह! कमाल है गुप्त ताकत और उसका प्रभाव दोनों दिखाई दे रहे हैं। हर एक बाप का बच्चा ऐसे मुस्करा रहे हैं जो हर एक के मुख पर बहुत अच्छी खुशी की चमक है। हर एक का मुस्कराता हुआ चेहरा देख बाप भी कितना मीठा मुस्करा रहे हैं।

आज की सभा मैजारिटी मुस्कराते हुए बेफिक्र बादशाहों की है, जो दूर से ही मुस्कराते हुए चेहरे बहुत सुन्दर दिखाई दे रहे हैं। आप भी एक दो को इसी रूप में देख रहे हो ना! सभी एक दो को ऐसे देख रहे हैं जैसे बहुत पहचाने हुए मुस्करा रहे हैं। आज की सभा विशेष मुस्कराती हुई ज्यादा दिखाई दे रही है। क्यों? सबके मन में एक ही साज है मीठा बाबा, प्यारा बाबा.. सबके मुख के इशारे यही बोल रहे हैं ओ मीठे बाबा, प्यारे बाबा.. आज तो जैसे बाबा बहुत दिनों के बाद बच्चों की ऐसी सभा देख रहे हैं, जो हर एक से मीठे बाबा, प्यारे बाबा... यही फीलिंग आ रही है, लास्ट वाला चेहरा भी देखो तो आज इसी विधि में है।

तो आज जहाँ तक रात को जागेंगे, वहाँ तक सब एक दो को देख जैसे मीठा मुस्करा रहे हैं, आप एक एक यह बाबा का और सभा का मुस्कराता हुआ चेहरा देखो, इस कोने में आपका बैठा हुआ मुस्कराता चेहरा देख-देख सारी सभा में भी उसी का प्रभाव है। चाहे अवस्था कैसी भी हो लेकिन अभी सबका चेहरा मुस्कराता हुआ दिखाई दे रहा है। सबका चेहरा ऐसे मुस्करा रहा है जो एक सेकण्ड में सारी सभा बदल गई है। कोई कैसा भी हो लेकिन बाबा उसे बदलकर सबका वही चेहरा दिखा रहे हैं। सबकी शकलें चमकती हुई दिखाई दे रही हैं। हर एक की शकल जैसे बाबा के वतन में चमकती हुई दिखाई देती है, ऐसे ही आज आप भी ऐसे चमकते हुए दीपक दिखाई दे रहे हैं। बाबा मुख से बहुत धीरे-धीरे बोल रहा है, क्या बोल रहे हैं? हर एक बच्चा ऐसे चमकती हुई सूरत और मूरत से जैसे अभी चित्र में दिखाई देते हैं, ऐसे ही चमकते हुए सितारे बहुत अच्छा चमक रहे हैं क्योंकि हर एक इस चमकते हुए सितारे की चमक बहुत सुन्दर है, क्यों? हर एक बच्चा अपने चमत्कारी सूरत में दिखाई दे रहे हैं। यह चित्र है तो आपका ही, लेकिन ऐसा चमकता हुआ सितारा अभी जैसे पहले दिखाई दे रहा था, ऐसे सफेद चमकता हुआ, साधारण रूप नहीं लेकिन चमकता हुआ फेस, वह सभा बड़ी अच्छी लग रही है। सब चमक रहे हैं, कोई भी ऐसा



नहीं जिसमें चमक न हो क्योंकि अभी सब बाबा को चमकता हुआ देख रहे हैं, ऐसे ही बाप समान सारी सभा चमक रही है। जो बापदादा सुनाते हैं, सारी सभा ऐसे बैठी थी जैसे पता नहीं कोई सचमुच ऊपर से फरिश्ते इस धरनी पर पहुंच गये हैं। यह रूप आपका भी बड़ा प्यारा है क्योंकि अभी और कुछ भी नहीं है, सभी सम्पूर्ण मूर्ति हो गये हैं और यह रूप बच्चों का कईयों को दिखाई दे रहा है। सभी बहुत खुश हो रहे हैं। सभी फरिश्ते रूप में अपने को देख बहुत खुश हो रहे हैं। हमको भी (दादी को भी) बाबा आपको फरिश्ते रूप में दिखा रहा है। हर एक पूज्य समान दिखाई दे रहा है। अभी तो ज्यादा समय नहीं बैठ सकते क्योंकि सबको संगमयुगी अपना स्वरूप अच्छा चमकता हुआ दिखाई दे रहा है। तो इसी फरिश्ते रूप में एक सेकण्ड में जैसे पहले इमर्ज हुए थे, ऐसे ही फरिश्ते रूप में अभ-अभी भी दिखाई दे रहे हैं। सारी सभा यहाँ आके देखो कितने में बदल गई है। इतने ताजधारी सब कहाँ जायेंगे! जैसे अभी गुप्त मर्ज रूप में हैं, इसी को ही इमर्ज रूप में देखेंगे। सारी सभा देखो कितनी चमकीली नज़र आ रही है। कोई टेढ़ा हो, बांका हो सब चमक रहे हैं और हर एक अपने को देखकर खुश हो रहे हैं। क्या पसन्द है? अपना चमकता हुआ फरिश्ता रूप पसन्द है ना! सेकण्ड में चमकीले बन गये। सारी सभा देखो चमकीली है। अपना ही चमकीला रूप अच्छी तरह से देख लो। ऐसा चमकीला अपना स्वरूप देख-देख बहुत खुशी हो रही है। तो यह अभी का रूप चमकने वाला, यह थोड़े समय के लिए बाबा ने इमर्ज करके दिखाया कि ऐसे आप सभी फरिश्ते हैं ही। उसी फरिश्ते रूप में बाबा ने आप सबको दिखाया। सेकण्ड में बदल गये। सारी सभा चमकीली ड्रेस में कितनी सुन्दर लग रही है। अपनी शक्ल आप देखो कितनी प्यारी लगती है क्योंकि सम्पूर्ण हैं ना। तो कितने सुन्दर लग रहे हैं। अभी साधारण रूप बदली करके फरिश्ता रूप देख रहे हो ना! आगे पीछे क्या दिखाई देता है? फरिश्ता और सारी सभा कितनी चमकती हुई दिखाई दे रही है। साधारण रूप किसका भी नहीं है, सभी का यह एक ही जैसा फरिश्ता रूप दिखाई देता है। बाकी अन्दर भले किसका कितना भी फर्क है वह तो वह खुद जाने, इसमें हम क्यों जायें। हमको तो सिर्फ अपना फरिश्ता रूप जो है, वह खास दिखाना है, एकदम फरिश्ता। तो देखो फरिश्ते रूप में जब चेंज होते हैं तो कितनी सभा बदल जाती है। वह स्वयं ही आपका फरिश्ता स्वरूप इमर्ज हो गया है। तुम्हारा ही चमकता हुआ यह स्वरूप कुछ समय आपके साथ रहेगा। तो अपना यह फरिश्ता स्वरूप पक्का हो गया! मैं फरिश्ता स्वरूपधारी हूँ, थोड़ा समय इसमें अनुभव करके देखो, कितना मीठा है।

अभी बाबा फरिश्ता भव का रूप प्रगट करता है। अभी एक सेकण्ड में फरिश्ता, एक सेकण्ड में साधारण, यह प्रैक्टिस करते-करते फरिश्ता बन ही जायेंगे। अभी फरिश्ते स्वरूप में रहना, ज्यादा समय फरिश्ते स्वरूप में, इस दुनिया में संगमयुगी फरिश्ता रूप यह कुछ समय रहेगा। यह फरिश्ता रूप कुछ समय आपके साथ रहेगा। आप भी अच्छी तरह से अनुभव करेंगे कि यह फरिश्ता रूप कितना अच्छा है। तो जितना फरिश्ता रूप में रहने चाहो उतना समय रह सकते हो लेकिन वह (सूक्ष्मवतन का) फरिश्ता रूप जो है वह अभी हमारे हाथ में नहीं है। यह फरिश्ते की लाइफ में है। अच्छा।

**सेवा का टर्न गुजरात और भोपाल का है, टोटल 24 हजार आये हैं, उसमें एक हजार डबल विदेशी 75 देशों से आये हैं:- (13 हजार गुजरात और 4 हजार भोपाल वाले आये हैं): बहुत अच्छा।**

(मुन्नी बहन ने कहा बाबा आज आप बहुत अच्छी तरह सबसे मिले, बहुत अच्छी मुरली चलाई)

कई समझते हैं हमारे को लास्ट में मिला है ना, तो पता नहीं शायद देरी हो इसलिए जल्दी-जल्दी मिलाते हैं। पर ऐसा नहीं है, टाइम की बात यहाँ नहीं देखते हैं। लेकिन बाबा भी दिखाता है, अगर देरी से कोई आता है तो उनके लिए ठहरते नहीं हैं। सिवाए दादियों के। दादियां तो फाउण्डेशन हैं। अच्छा।

(इन्डिया वन सोलार प्लांट का उद्घाटन बापदादा से कराया)

कुछ भी बना है, तो यज्ञ में बनाया है और इसी रीति से चलाते रहेंगे। बाकी सब ठीक है।

### आज बापदादा ने विशेष संगमयुगी फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करने के लिए कहा है, उस अनुभूति के लिए विशेष ध्यान देने योग्य प्वाइंटस

- 1- जैसे सम्पन्नता का समय समीप आता जा रहा है, ऐसे देह-भान रहित फरिश्ता रूप की अनुभूति करो। जैसे साकार ने कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारे, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई। ऐसे बात करते भी आपकी दृष्टि में अलौकिकता दिखाई दे। ऐसे देह-भान से न्यारे रहो जो दूसरे को भी देह का भान नहीं आये।
- 2- हर बात में, वृत्ति, दृष्टि, कर्म... सबमें न्यारापन अनुभव हो। यह बोल रहा है लेकिन न्यारा-न्यारा, आत्मिक प्यारा, ऐसे फरिश्तेपन की अनुभूति स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ। ब्रह्मा बाप जो फरिश्ता रूप में आप सबका साथी है, अब उनके समान आप सभी को फरिश्ता बन परमधाम चलना है, इसके लिए मन की एकाग्रता पर अटेंशन दो। ऑर्डर से मन को चलाओ।
- 3- सदैव अपना आकारी रूप, लाइट का फरिश्ता स्वरूप सामने दिखाई दे कि ऐसा बनना है और भविष्य रूप भी दिखाई दे। अब यह छोड़ा और वह लिया। जब ऐसी अनुभूति हो तब समझो कि सम्पूर्णता के समीप हैं। यह पुरुषार्थी शरीर एकदम मर्ज हो जाये।
- 4- फरिश्ता बनना अर्थात् साकार शरीरधारी होते हुए लाइट रूप में रहना अर्थात् सदा बुद्धि द्वारा ऊपर की स्टेज पर रहना। फरिश्ते के पांव धरनी पर नहीं रहते, बुद्धि रूपी पांव सदा ऊंची स्टेज पर। फरिश्तों को ज्योति की काया दिखाते हैं। तो जितना अपने को प्रकाश स्वरूप आत्मा समझेंगे, तो चलते फिरते अनुभव करेंगे जैसे प्रकाश की काया वाले फरिश्ते बनकर चल रहे हैं।
- 5- फरिश्ता अर्थात् अपनी देह के भान से भी रिश्ता नहीं, देहभान से रिश्ता टूटना अर्थात् फरिश्ता। देह से नहीं, देह के भान से। देह से रिश्ता खत्म होगा तब तो चले जायेंगे, लेकिन देह-भान का रिश्ता खत्म हो। जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं लेकिन शरीर में फंस नहीं जाते हैं। ऐसे कर्म के लिए आधार लो और फिर अपने फरिश्ते स्वरूप में, निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ।
- 6- जबकि बाप के बन गये और सब कुछ मेरा सो तेरा कर दिया तो हल्के फरिश्ते हो ही गये। इसके लिए सिर्फ एक ही शब्द याद रखो कि यह सब बाप का है, मेरा कुछ नहीं। जहाँ मेरा आये वहाँ तेरा कह दो फिर कोई बोझ नहीं फील होगा।
- 7- फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। फरिश्ता सदा चमकने के कारण सर्व को अपनी तरफ स्वतः आकर्षित करता है। फरिश्ता सदा ऊंचे रहते हैं। फरिश्तों को पंख दिखाते हैं क्योंकि उड़ते पंछी हैं। तो जब बाप मिला, ऊंचा स्थान मिला, ऊंची स्थिति मिली तो सदा उड़ते रहो और बेहद सेवा करते रहो।

- 8- फरिश्ता वही बनता जिसका देह और देह की दुनिया के साथ कोई रिश्ता नहीं। शरीर में रहते ही हैं सेवा के अर्थ, न कि रिश्ते के आधार पर। सम्बन्ध समझकर प्रवृत्ति में नहीं रहना, सेवा समझकर रहना। कर्मबन्धन के वशीभूत होकर नहीं रहना। जहाँ सेवा का भाव है वहाँ सदा शुभ भावना रहती है, और कोई भाव नहीं, इसको कहा जाता है अति न्यारा और अति प्यारा, कमल समान।
- 9- फरिश्ता स्वरूप अर्थात् लाइट का आकार, जिसमें कोई व्याधि नहीं, कोई पुराने संस्कार स्वभाव का अंश नहीं, कोई देह का रिश्ता नहीं, कोई मन की चंचलता नहीं, कोई बुद्धि के भटकने की आदत नहीं – ऐसा फरिश्ता स्वरूप, प्रकाशमय काया का अनुभव करो तो देह के स्वार्थी सम्बन्ध, सुख-शान्ति का चैन छीनने वाले विनाशी सम्बन्धी, मोह की रस्सियों में बांधने वाले, ऐसे अनेक सम्बन्ध स्वतः छूट जायेंगे। एक सुखदाई सम्बन्ध में ही सदा रहेंगे।
- 10- हम ब्राह्मण सो फरिश्ता हैं, यह कम्बाइन्ड रूप की अनुभूति विश्व के आगे साक्षात्कार मूर्त बनायेगी। ब्राह्मण सो फरिश्ता इस स्मृति द्वारा चलते-फिरते अपने को व्यक्त शरीर, व्यक्त देश में पार्ट बजाते हुए भी ब्रह्मा बाप के साथी अव्यक्त वतन के फरिश्ते, अव्यक्त रूपधारी अनुभव करेंगे। यह अव्यक्त भाव व्यक्तपन के बोल-चाल, व्यक्त भाव के स्वभाव, व्यक्त भाव के संस्कार सहज ही परिवर्तन कर देगा।
- 11- फरिश्ता अर्थात् दिव्यता स्वरूप। दिव्यता की शक्ति साधारणता को समाप्त कर देती है। जितनी-जितनी दिव्यता की शक्ति हर कर्म में लायेंगे उतना ही सबके मन से, मुख से स्वतः ही यह बोल निकलेंगे कि यह दिव्य दर्शनीय मूर्त हैं। अनेक भक्त जो दर्शन के अभिलाषी हैं, उनके सामने आप स्वयं दिव्य दर्शन मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब ही सर्व आत्मायें दर्शन कर प्रसन्न होंगी।
- 12- फरिश्ता अर्थात् जिसकी दुनिया ही एक बाप है। निमित्त मात्र देह में हैं और देह के सम्बन्धियों से कार्य में आते हैं लेकिन लगाव नहीं। अभी-अभी देह में कर्म करने के लिए आये और अभी-अभी देह से न्यारे। फरिश्ते सेकण्ड में यहाँ, सेकण्ड में वहाँ क्योंकि उड़ने वाले हैं। कर्म करने के लिए देह का आधार लिया और फिर ऊपर - अब यही अभ्यास बढ़ाओ।
- 13- फरिश्ता जीवन की विशेषता है - इच्छा मात्रम् अविद्या। देवताई जीवन में तो इच्छा की बात ही नहीं। जब ब्राह्मण जीवन सो फरिश्ता जीवन बन जाती अर्थात् कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते तब किसी भी शुद्ध कर्म, व्यर्थ कर्म, विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में नहीं बंध सकते।
- 14- फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए विशाल दिल वाले बेहद के स्मृति स्वरूप बनो। जहाँ बेहद है वहाँ कोई भी प्रकार की हद अपने तरफ आकर्षित नहीं कर सकती। कर्मातीत का अर्थ ही है - सर्व प्रकार के हद के स्वभाव-संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारा।
- 15- फरिश्ता जीवन बन्धनमुक्त जीवन है। भल सेवा का बन्धन है, लेकिन इतना फास्ट गति है जो जितना भी करे, उतना करते हुए भी सदा फ्री है। जितना ही प्यारा, उतना ही न्यारा। सदा ही स्वतन्त्रता की स्थिति का अनुभव करते हैं। शरीर और कर्म के अधीन नहीं, अगर देहधारियों के सम्बन्ध में आते भी हैं तो ऊपर से आये, संदेश दिया और यह उड़ा।